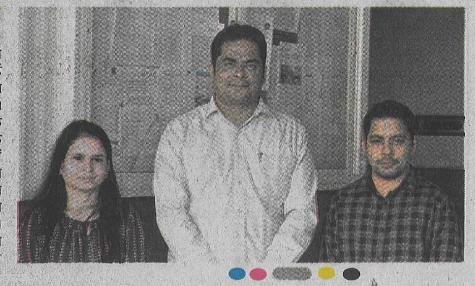
रोना की तरह मेनिनजाइटिस भी बन सकता है महामारी का कारण

इंदीर 🔳 राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर के शोधकर्ताओं ने मेनिन्जाइटिस के संपूर्ण जीनोम में कुछ कन्सर्व्ड रीजन को पाया जिनका उपयोग चिकित्सीय लक्ष्यों के रुप में किया जा सकता हैं। मेनिनजाइटिस एक गंभीर संक्रमण है जो मस्तिष्क और रीढ़ की हड़डी के आसपास की सुरक्षात्मक परत को प्रभावित करता है। पिछले कुछ दशकों से मेनिन्जाइटिस एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चनौती बना हुआ हैं। यह रोग बैक्टीरिया, वायरस ्या कवक के कारण हो सकता है, लेकिन इसका प्रमुख कारण बैक्टीरियल संक्रमण हैं। मेनिनजाइटिस मुख्यतः निसेरिया मेनिगिटिडिस बैक्टीरिया द्वारा फैलता है। र त्रषाणु की



तरह यह भी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में हवा केवल रोगजनक निसेरिया के माध्यम से फैलता है जो कि अक्सर महामारी प्रजातियों में मौजूद हैं और का कारण बन सकती हैं।

जीवाण फैमली में विभिन्न में से केवल एजेंटों के खिलाफ एक दो रोगजनक : डॉ. अमित कमार, प्रोफेसर और बायो साइंस एंड बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग, आईआईटी इंदौर के प्रमुख का कहना हैं इस अध्ययन के परिणाम आशाजनक है और घातक बैक्टीरिया के खिलाफ नई चिकित्सीय जैन और उमा शंकर द्वारा रणनीति विकसित करने के लिए मेनिनगोकोकस के विकासवादी संरक्षित जीनोमिक क्षेत्रों के उपयोग का समर्थन करते हैं। निसेरिया जीवाण फैमिली में विभिन्न सदस्य होते हैं और उनमें से केवल दो रोगजनक होते हैं। हमारे समूह ने एक जर्नल में प्रकाशित विभिन्न जीनोमिक क्षेत्रों की पहचान की है जो हुआ हैं।

इन रोग पैदा करने वाले चयनात्मक लक्ष्य के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता हैं। यह शोध कार्य, प्रोफेसर अमित की अगुवाई में नेहा किया गया हैं। यहह शोध कार्य, अमेरिकन केमिकल सोसायटी जर्नल-एसीएस इन्फेक्शस डिजीज नाम के

आमतीर पर यह होता है नॉन टॉक्सिक

मेनिगोकोकस आमातेर पर नॉन टॉक्सिक होता है और इससे कोई बीमारी नहीं होती हैं लेकिन कभी कभी यह विषाण बन जाता है। हालांकि यह रोग किसी भी उम्र के व्यक्ति को संक्रमित कर सकता है लेकिन यह पांच साल से कम उम्र के बच्चों, अथवा रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी वाले व्यक्तियों, किशोरी और युवा व्यस्कों में भी इसका सक्रमण देखा गया है। ऐसे करिक का अभी तक पूरी तरह से अध्ययन नहीं हो पाया है जो इन परिवर्तनों को गैर-विषाण से विषाणजनित बैक्टीरिया में ले जाते हैं। बैक्टीरिया के संक्रामक व्यवहार में इस बदलाव को समझने में मॉलिक्यलर स्तर पर रेगुलेटरी घटकों का अध्ययन बहुत मददगार हो सकता हैं। इन रेगुलेटर को समझने के लिए आईआईटी इंदौर के एक भारतीय शोध समह ने मेनिनजाइटिस करने वाले बैक्टीरिया के जीनोम मे विभिन्न एवोलुशनरी कन्सर्व्ड रीजन की पहचान की है जो एक अद्वितीय डीएनए सेकेंडरी संरचना बनाते हैं।